ॐ गं गणपतये नमः

शुभ लाभ

जन्मपत्रिका

Sample

Created By: www.futurepointindia.com

Model: T-PageTitle,M2

Order No: 101-102-101-1001/112920

Future Point (P) Ltd.

D-68, Hauz Khas, New Delhi-110016

Ph.: 011-40541000, 40541020

Email: mail@futurepointindia.com

Sample		Sample
पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
01/01/2012	जन्म तिथि	01/02/2012
रविवार	दिन	बुधवार
घंटे 23:10:00	जन्म समय	10:30:00 घंटे
घटी 39:46:25	जन्म समय(घटी)	08:16:53 घटी
India	देश	India
	स्थान	Ropar
28:39:00 उ	अक्षांश	30:59:00 उ
77:13:00 पू	रेखांश	77:13:00 पू
82:30:00 पू	मध्य रेखांश	82:30:00 पू
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:15:25	सूर्योदय	07:11:14
17:33:35	सूर्यास्त	17:58:21
24:01:46	चित्रपक्षीय अयनांश	24:01:51
सिंह	लग्न	मीन
सूर्य	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
मीन	राशि	मेष
गुरु	राशि-स्वामी	मंगल
रेवती	नक्षत्र	कृतिका
बुध	नक्षत्र स्वामी	सूर्य
2	चरण	1
परिघ	योग	शुक्ल
बव	करण	बालव
दो	जन्म नामाक्षर	अ
मकर	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ
विप्र	वर्ण	क्षत्रिय
जलचर	वश्य	चतुष्पाद
गज	योनि	मेष
देव	गण	राक्षस
अन्त्य	नाड़ी	अन्त्य
सर्प	वर्ग	गरूड़

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी

बुध 10 वर्ष 4 मा 15 दि

बुध
01/01/2012
18/05/2022

बुध	00/00/0000
केतु	00/00/0000
शुक्र	01/01/2012
सूर्य	17/06/2012
चंद्र	17/11/2013
मंग	14/11/2014
राहु	02/06/2017
गुरु	08/09/2019
शनि	18/05/2022

अंश	राशि	ग्रह		राशि	अंश
29:48:36	सिंह	लग्न		मीन	24:58:45
16:40:45	धनु	सूर्य		मक	17:41:55
21:51:40	मीन	चंद्र		मेष	28:53:54
26:15:35	सिंह	मंग	व	सिंह	28:38:02
26:47:40	वृश्चि	बुध		मक	13:20:43
06:24:58	मेष	गुरु		मेष	08:38:06
20:41:47	मक	शुक्र		कुंभ	27:37:12
04:18:21	तुला	शनि		तुला	05:26:28
19:56:38	वृश्चि	राहु		वृश्चि	18:23:59
19:56:38	वृष	केतु		वृष	18:23:59
06:49:41	मीन	हर्ष		मीन	07:45:41
04:52:47	कुंभ	नेप		कुंभ	05:52:27
13:19:13	धनु	प्लू		धनु	14:21:18

विंशोत्तरी

सूर्य 4 वर्ष 11 मा 28 दि

सूर्य
01/02/2012
29/01/2017

सूर्य	00/00/0000
चंद्र	01/02/2012
मंग	25/03/2012
राहु	17/02/2013
गुरु	06/12/2013
शनि	18/11/2014
बुध	24/09/2015
केतु	30/01/2016
शुक्र	29/01/2017

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:01:46

लग्न-चलित

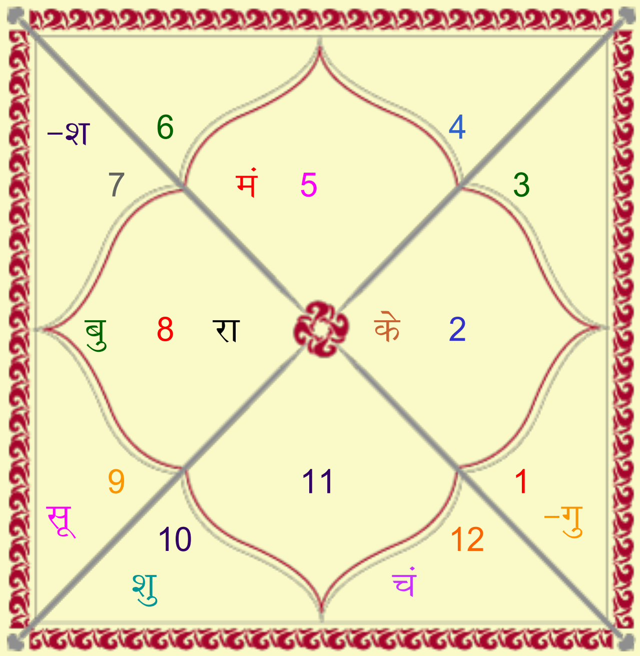

लग्न-चलित

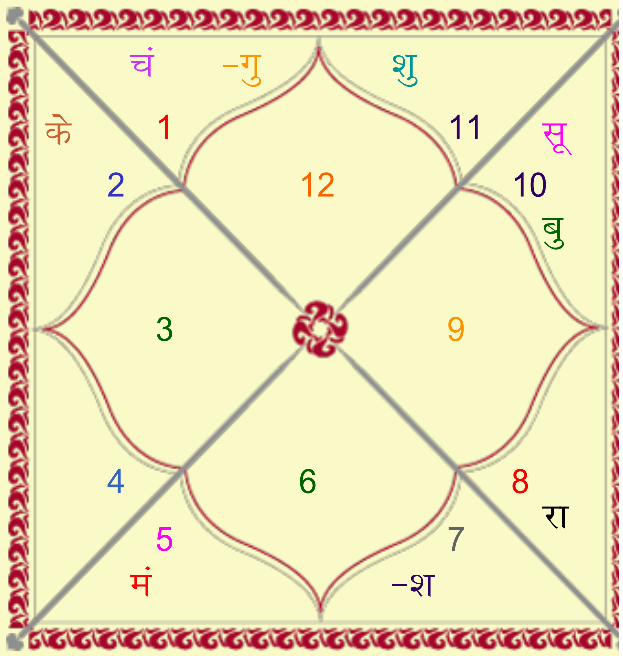

Future Point (P) Ltd.
D-68, Hauz Khas, New Delhi-110016
Ph.: 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Sample

Sample

चन्द्र कुंडली

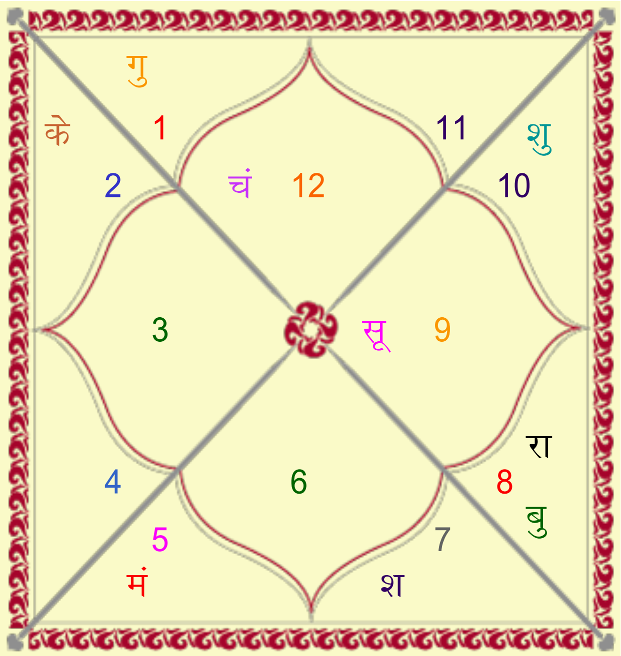

चन्द्र कुंडली

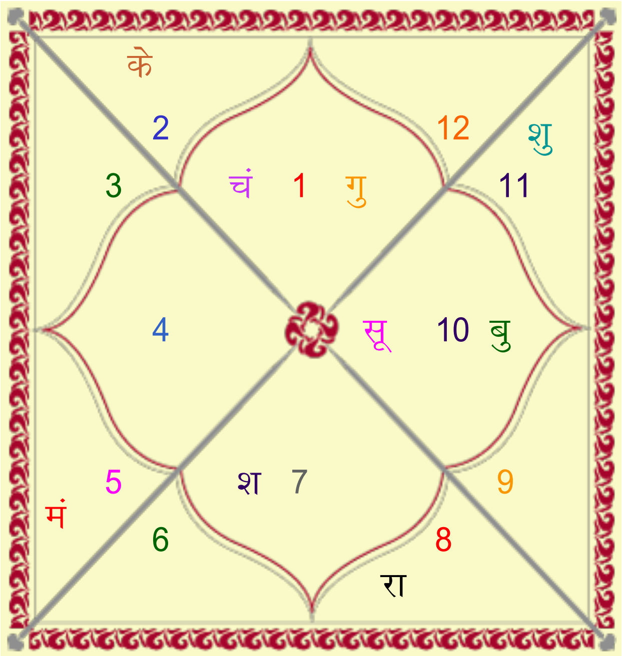

नवमांश कुंडली

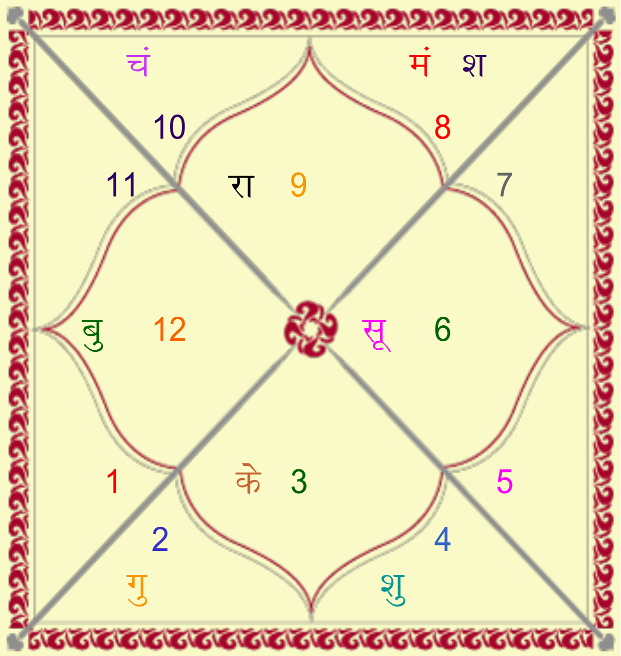

नवमांश कुंडली

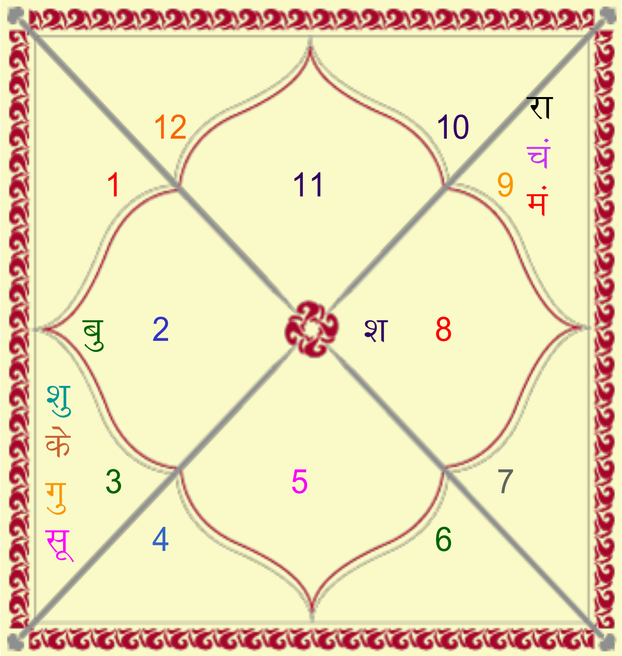

Future Point (P) Ltd.
D-68, Hauz Khas, New Delhi-110016
Ph.: 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गज	मेष	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	मेष	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			**36**	**12.50**		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि श्री का नक्षत्र रेवती है।

श्री का वर्ग सर्प है तथा सुश्री का वर्ग गरूड़ है। इन दोनों वर्गों में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार श्री और सुश्री का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

श्री मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।
सुश्री मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।
क्योंकि मंगल सुश्री की कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

श्री तथा सुश्री में मंगलीक मिलान ठीक है।

Future Point (P) Ltd.
D-68, Hauz Khas, New Delhi-110016
Ph.: 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Sample Sample

निष्कर्ष

अष्टकूट मिलान : 12.5 / 36.0

श्री तथा सुश्री में मंगलीक मिलान ठीक है।

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

Sample Sample

मेलापक फलित

स्वभाव

श्री की जन्मराशि जलतत्व युक्त मीन तथा सुश्री की राशि अग्नितत्व युक्त मेषराशि है। जल एवं अग्नितत्व में नैसर्गिक विषमता होने के कारण इनमें स्वभावगत विषमता रहेगी जिससे दाम्पत्य संबंधों में मधुरता की न्यूनता रहेगी अतः यह मिलान विशेष अच्छा नहीं रहेगा।

श्री की जन्मराशि का स्वामी बृहसपति तथा सुश्री की राशि का स्वामी मंगल परस्पर मित्रराशियों में स्थित हैं । अतः इसके प्रभाव से इनके दाम्पत्य संबंधो में मधुरता रहेगी तथा परस्पर प्रेम आकर्षण सहानुभूति तथा समर्पण का भाव होगा। साथ ही सुख दुख में एक दूसरे को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। ये दोनों अच्छे मित्रों की तरह एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे फलतः मतभेद एवं वैमनस्य के भाव की न्यूनता रहेगी तथा एक आदर्श एवं सौभाग्यशाली दम्पति के रूप में अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।

श्री और सुश्री की राशियां परस्पर द्वितीय तथा द्वादश भाव में पड़ती हैं शास्त्रानुसार यह एक भकूट दोष माना जाता है। अतः इसके प्रभाव से उपरोक्त शुभप्रभावों में न्यूनता आएगी तथा अशुभ प्रभावों में वृद्धि होगी फलतः आपसी संबंधों में यदा कदा तनाव मतभेद तथा विरोध के भाव की उत्पति होगी जिससे दाम्पत्य संबंधो में तनाव उत्पन होगा तथा पारिवारिक अशान्ति भी बनी रहेगी परन्तु श्री और सुश्री दोनों बुद्धिमता एवं सामंजस्य की प्रवृति का भी अनुपालन भी करेंगे।अतः अशुभ प्रभावों में न्यूनता आ सकती है।

श्री का वश्य जलचर तथा सुश्री का वश्य चतुष्पद है। अतः इनमें नैसर्गिक विषमता के कारण इनकी अभिरूचियों में अन्तर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी आवश्यकताएँ भिन्न होंगी। साथ ही कामसम्बंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न एवं संतुष्ट रखने में असमर्थ रहेंगे। अतः सम्बंध तनाव युक्त रहेंगे।

श्री का वर्ण ब्राहमण तथा सुश्री का वर्ण क्षत्रिय है। अतः श्री की प्रवृति धार्मिक तथा शैक्षणिक कार्यो में रहेगी परन्तु सुश्री साहसिक तथा पराक्रमी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी फलतः कार्य क्षेत्र में भी स्थिति सुदृढ़ रहेगी।

धन संबंधी

श्री और सुश्री की तारा परस्पर सम है। अतः इनकी आर्थिक स्थिति पर तारा का प्रभाव विशेष शुभ या अशुभ नहीं रहेगा। लेकिन इनकी राशियां परस्पर द्वितीय एवं द्वादश भाव में पड़ती हैं जो एक प्रबल भकूट दोष माना जाता है तथा आर्थिक स्थिति पर इसका

विशेष दुष्प्रभाव पड़ता है। परन्तु मंगल का आर्थिक क्षेत्र पर प्रभाव सम रहेगा। अतः सामान्यतया श्री औरसुश्री समृद्ध एवं सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे।

भकूट दोष के प्रभाव सेसुश्री की प्रवृति अधिक एवं अनावश्यक व्ययशील रहेगी तथा भौतिक साधनों पर अनावश्यक व्यय करेंगी। साथ ही श्री भी जुए या अन्य व्यसनों से अधिक हानि प्राप्त कर सकते है। अतः आर्थिक स्थिति की सुदृढ़ता के लिए कक्त औरसुश्री को अपनी ऐसी प्रवृतियों पर नियंत्रण रखने की कोशिश करनी चाहिए।

स्वास्थ्य

श्री और सुश्री अन्त्य नाड़ी में उत्पन्न हुए हैं। अतः एक ही नाड़ी में उत्पन्न होने के कारण उनका स्वास्थ्य नाड़ी दोष से प्रभावित होगा तथा शारीरिक रूप से दोनों अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। इसका मुख्य प्रभाव सुश्री पर रहेगा जिससे वह गले तथा फेफड़ों से सम्बधित परेशानी महसूस करेंगी। साथ ही कफ या शीतादि से भी उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। मंगल के दुष्प्रभाव से भी मिस को धातु या गुप्त रोगों से परेशानी रहेगी जिससे मासिक धर्म सम्बन्धी अनियमितता भी हो सकती है। अतः मंगल के दुष्प्रभाव को समाप्त करने के लिए श्री को नियमित रूप से हनुमान जी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास रखने चाहिए।

सन्तान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से श्री और सुश्री का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त श्री और सुश्री के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में सुश्री के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन सुश्री को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में सुश्री को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से श्री और सुश्री सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में

अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार श्री और सुश्री का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

सुश्री के अपने ससुराल पक्ष के लोगों से अच्छे संबध रहेंगे साथ ही अन्य जनों की अपेक्षा सास से संबधों में अधिक मधुरता रहेगी। विवाह के बाद सुश्री अत्यंत ही धैर्य एवं परस्पर सामजंस्यता के भाव का पालन करेंगी। उनका यह धैर्य एवं सामंजस्यता का भाव भविष्य में उनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

साथ ही ससुर के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। अपनी मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार से उनके हृदय को जीतने में समर्थ रहेंगी। इसी प्रकार अपनी मुक्त मित्रता की प्रवृति के कारण देवर एवं ननदों से भी संबध अनुकूल रहेंगे तथा उनकी ओर से सुश्री पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

यद्यपि सुश्री अपनी ओर से समस्त ससुराल पक्ष के लोगों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी परन्तु इन लोगों से इन्हें कोई विशिष्ट सहयोग नहीं मिलेगा तथा संबधो में औपचारिकता अधिक रहेगी।

ससुराल-श्री

श्री के अपनी सास से संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण इनमें विचार वैभिन्यता रहेगी लेकिन यदि दोनों परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता का व्यवहार करें तो उपरोक्त मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा संबधों में वृद्धि के भी अवसर बनेंगे।

साथ ही ससुर से भी परस्पर संबधों में विवाद तथा तनाव युक्त वातावरण रहेगा जिससे न ही श्री उनको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे तथा वे भी इन्हें विशेष अपनत्व तथा स्नेह का भाव अल्प ही प्रदान करेंगे। लेकिन साले एवं सालियों से संबध अच्छे रहेंगे तथा परस्पर स्नेह सहयोग तथा सहानुभूति का भाव रहेगा। इनके संबधों में मित्रता का भाव भी रहेगा जिससे परस्पर मुक्त भाव से वार्तालाप होता रहेगा। इस प्रकार ससुराल वालों का दृष्टिकोण श्री के प्रति अनुकूल रहेगा तथा उन्हें प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने में नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।

D-68, Hauz Khas, New Delhi-110016
Ph.: 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com